समय हाथ से
निकल जाने के
बाद केवल पश्चाताप
ही हाथ लगता है।
– अज्ञात

# विदेशी स्टूडेंट्स को ट्रंप का झटका

**प्रशासन ने इन विद्यार्थियों से कहा है कि उनके कॉलेज या विश्वविद्यालय अगर पूरी तरह ऑनलाइन पढ़ाई पर आ गए हैं तो वे या तो किसी और संस्थान में कोई ऐसा कोर्स जॉइन कर लें, या फिर अमेरिका छोड़कर अपने देश चले जाएं, क्योंकि ऑनलाइन पढ़ाई के लिए उनका वीजा मंजूर नहीं किया जाएगा।**

राधा जोशी।

अमेरिकी विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे विदेशी स्टूडेंट्स को ट्रंप प्रशासन की ओर से एक और बड़ा झटका लगा है। प्रशासन ने इन विद्यार्थियों से कहा है कि उनके कॉलेज या विश्वविद्यालय अगर पूरी तरह ऑनलाइन पढ़ाई पर आ गए हैं तो वे या तो किसी और संस्थान में कोई ऐसा कोर्स जॉइन कर लें जहां क्लासरूम में प्रत्यक्ष उपस्थिति के जरिए पढ़ाई हो रही हो, या फिर अमेरिका छोड़कर अपने देश चले जाएं, क्योंकि ऑनलाइन पढ़ाई के लिए उनका वीजा मंजूर नहीं किया जाएगा।

ध्यान रहे, कोरोना के चलते अन्य देशों की तरह अमेरिका में भी ज्यादातर कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में ऑनलाइन क्लासेज ही ली जा रही हैं। बहुत सारे स्टूडेंट महामारी की दहशत में पहले ही अपने घर लौट आए हैं। इस नए निर्देश का मतलब यह होगा कि कुछ समय बाद महामारी का असर कम होने पर जब वे अमेरिका लौटना चाहेंगे तो उन्हें वीजा नहीं मिलेगा और जो बाहरी छात्र अभी वहां रह रहे हैं, उन्हें भी कई तरह की उलझनों का सामना करना पड़ेगा। अमेरिका के इन विदेशी स्टूडेंट्स में सबसे बड़ी संख्या चीनियों की और उसके बाद भारतीयों की है।

अमेरिकी सरकार के इस कदम के पीछे सीधा तर्क यह हो सकता है कि जब ऑनलाइन पढ़ाई ही करनी है तो इससे क्या फर्क पड़ता है कि आप इसके लिए किसी अमेरिकी शहर में बैठे हैं या भारत स्थित अपने घर में। इस काम के लिए आपको अमेरिकी वीजा क्यों दिया जाए? लेकिन ध्यान रखने की बात यह है कि जब भी कोई युवा लाखों रुपये लगाकर किसी अमेरिकी यूनिवर्सिटी के कोर्स में दाखिला लेने का फैसला करता है तो इसके पीछे सिर्फ वहां के स्टडी मटीरियल का आकर्षण नहीं होता।

इस कोर्स के दौरान, और हो सके तो कोर्स के बाद कुछ दिन वहां काम करके उस देश के माहौल का प्रभाव ग्रहण करना, अपने संपर्क बढ़ाना और एक ऐसी ग्लोबल पर्सनैलिटी के रूप में खुद को विकसित करना, जिसकी करियर संभावनाएं किसी खास देश तक सीमित न रहें, ये सभी कारक उसके इस फैसले के पीछे होते हैं। ऐसे में ऑनलाइन पढ़ाई का हवाला देकर उनसे वीजा छीनना उन्हें उन अवसरों से वंचित करना है जिनके लिए उन्होंने किसी अमेरिकी यूनिवर्सिटी में दाखिला लेने का फैसला किया था।

ध्यान रहे, ये विदेशी स्टूडेंट्स कुल अमेरिकी स्टूडेंट्स का 5.5 फीसदी हैं और साल 2019 में इन्होंने अमेरिकी विश्वविद्यालयों में 41 अरब डॉलर तो सिर्फ फीस भरी थी। यह भी विचित्र है कि वीजा नियमों में ऐसे फेरबदल की खबरें कहीं और से नहीं आ रहीं जबकि कोरोना काल में लगभग सभी देशों के विश्वविद्यालय ऑनलाइन पढ़ाई ही करा रहे हैं। बहरहाल, अमेरिकी विश्वविद्यालयों को इस मसले पर पहल करते हुए सरकार से बातचीत करके कोई राह निकालनी चाहिए, क्योंकि मौजूदा व्यवस्था का सबसे बड़ा फायदा भी वही ले रहे हैं।

## सहजीवन

**अशोक वोहरा।** धीरे–धीरे, औद्योगिक घराने क्योसे और सहजीवन की अवधारणा का उपयोग करने लगे, और अब जापान में कई शैक्षणिक और अन्य संस्थाएं क्योसे के नाम से उपस्थित हैं। औद्योगिक घरानों द्वारा इसे स्वीकार करने से इसका गहन आध्यात्मिक आयाम कहीं खो सा गया है लेकिन जीवन की राह को सक्षम करने के रूप में यह लोकप्रिय हो रहा है। क्योसे मध्यम मार्ग को भी बढ़ावा देता है जिसे संयम और सादगी को अपनाकर एवं स्वार्थ और परोपकारिता में संतुलन बनाकर प्राप्त किया जा सकता है। हालांकि यह सामाजिक सिद्धांत सद्भावों के सकारात्मक दर्शन के लिए एक आध्यात्मिक आधार प्रदान करते हैं।

## संपादकीय

### टेस्टिंग में कौन कहां

प्रधानमंत्री ने शनिवार को समीक्षा के दौरान पूरे एनसीआर में कोरोना पर दिल्ली जैसे प्रयासों पर जोर देकर अच्छा संकेत दिया है। सर्वाधिक केस वाले राज्य महाराष्ट्र ने प्रति मिलियन 11012 टेस्ट किए। तमिलनाडु ने 21262 टेस्ट किए और दूसरे नंबर पर है। तीसरे नंबर पर दिल्ली राष्ट्रीय औसत से 4.66 गुना ज्यादा टेस्टिंग कर रही है। लिहाजा, बिहार में 2594, उत्तरप्रदेश में 4929, झारखंड 4824, मध्यप्रदेश 5912, गुजरात 6839, छत्तीसगढ़ 7306 और उत्तराखंड में 8448 टेस्ट प्रति मिलियन काफी कम हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना की अधिकतम टेस्टिंग को सबसे जरूरी बताया है। भारत में कोरोना का प्रसार रोकने के लिए अधिकतम टेस्टिंग का कोई विकल्प नहीं। इस आलोक में देखें तो ब्राजील से तुलना करके उत्तरप्रदेश की कथित सफलता पर खुश होना आत्मघाती है। भारत से चीन की तुलना में एक और महत्वपूर्ण तथ्य है। चीन ने अब तक नौ करोड़ से ज्यादा टेस्ट किए हैं जबकि भारत अब तक 1.18 करोड़ टेस्ट तक सीमित है। यानी चीन ने भारत से नौ गुना ज्यादा टेस्ट किए। अगर भारत ने भी नौ करोड़ टेस्ट किए होते तो कोरोना पॉजिटिव की संख्या कितनी अधिक होती, इसका अनुमान लगाना मुश्किल है। कोरोना पॉजिटिव लोगों में बड़ी संख्या ऐसिम्प्टमैटिक लोगों की होती है। इनमें कोई लक्षण नहीं दिखते। इसके कारण जो कोरोना संक्रमित हैं, उनमें काफी लोगों को इसका पता ही नहीं चलता। ऐसे लोग अगर किसी अन्य रोग से ग्रसित न हों तो सामान्यतः 15 दिन में ठीक हो जाते हैं। लेकिन दूसरों को संक्रमित करते रहते हैं। अगर हम कोरोना के अधिकतम मामलों की पहचान करके सबके इलाज के दायित्व से मुंह चुराएंगे तो लोग बीमार और खोखले होते जाएंगे।

प्रधानमंत्री मोदी के अनुसार ब्राजील और उत्तरप्रदेश, दोनों की जनसंख्या लगभग एक समान है। लिहाजा यूपी में कोरोना मामले कम होना संतोष की बात है।

# सिलेक्टिव आंकड़े

विष्णु राजगढ़िया।।

प्रबंधन और प्रचार, दोनों कला है। दोनों में आंकड़ों का खेल है। इसका दिलचस्प उदाहरण हाल में देखने को मिला जब प्रधानमंत्री ने ब्राजील की तुलना में यूपी में कोरोना मामले कम होने पर संतोष व्यक्त किया। यह प्रचार कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। मोदी ने अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी के एनजीओ प्रतिनिधियों से विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए संवाद में कहा कि ब्राजील में कोरोना वायरस से 65 हजार मौतें हुई हैं। उत्तरप्रदेश भी ब्राजील जितना बड़ा है, लेकिन यहां केवल 800 मौतें हुईं। प्रधानमंत्री के अनुसार ब्राजील और उत्तरप्रदेश, दोनों की जनसंख्या लगभग एक समान है। लिहाजा यूपी में कोरोना मामले कम होना संतोष की बात है।

उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी आई तो सभी भारत को लेकर डरे हुए थे। 23–24 करोड़ की आबादी वाले उत्तर प्रदेश को लेकर तो आशंकाएं और भी ज्यादा थीं लेकिन यूपी ने संक्रमण को काबू में रखा। ऐसे सिलेक्टिव आंकड़े आम नागरिकों को काफी प्रभावित करते हैं लेकिन जिन्हें गहराई में जाने की आदत हो, उनके लिए यही आंकड़े बड़ी तस्वीर पेश करना आसान करते हैं।

आइए, मोदी जी के इस कथन के विस्तार में चलें। यह सच है कि यूपी और ब्राजील की आबादी लगभग समान है। ब्राजील में अब तक कोरोना के 17 लाख से ज्यादा मामले आए और 68 हजार मौत हुई है। जबकि यूपी में मात्र 31 हजार मामले आए और 845 मौत हुई। लेकिन इसे यूपी में कोरोना का संक्रमण न होने अथवा बेहतर नियंत्रण में सफलता बतौर देखना जल्दबाजी होगी। हमें सबसे पहले यह देखना होगा कि कोरोना के कितने टेस्ट हुए हैं। 12 जुलाई तक ब्राजील में कोरोना के 45.72 लाख टेस्ट हुए। यानी प्रति दस लाख आबादी पर 21508 टेस्ट हुए।

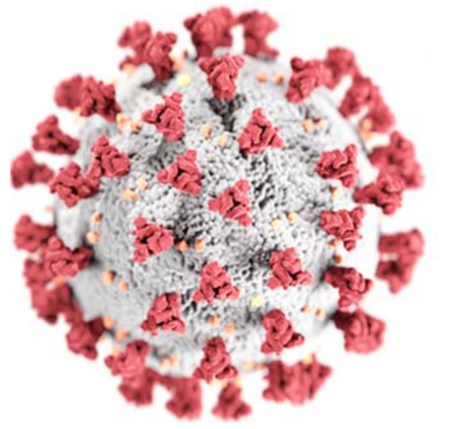

दूसरी तरफ, 12 जुलाई तक उत्तरप्रदेश में मात्र 11.08 लाख टेस्ट हुए। प्रति दस लाख आबादी पर मात्र 4929 टेस्ट। जाहिर है कि जब टेस्टिंग ही नहीं होगी तो किसी व्यक्ति के कोरोना से ग्रसित होने अथवा नहीं होने का पता कैसे चलेगा? उत्तरप्रदेश में कोरोना की कम टेस्टिंग होना विवाद का विषय रहा है। राज्य के वरीय पूर्व आईएएस सूर्यप्रताप सिंह ने एक ट्वीट में यूपी सरकार पर 'नो टेस्ट, नो कोरोना' पॉलिसी पर चलने का आरोप लगाया था। इसके कारण उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर ली गई।

ऐसे में प्रधानमंत्री के सिलेक्टिव आंकड़े हमें समग्र पहलुओं पर सोचने को बाध्य करते हैं। यूपी और ब्राजील की जनसंख्या के आधार पर जैसी तुलना की गई है, वैसी ही भारत और चीन के संदर्भ में करें तो तस्वीर बिल्कुल उलट जाएगी। चीन की आबादी भारत से काफी अधिक है। वर्ष 2020 में चीन की अनुमानित आबादी 143 करोड़ है जबकि भारत की 138 करोड़। इस नाते भारत में कोरोना मामले चीन से काफी कम होने चाहिए। लेकिन 12 जुलाई तक के आंकड़ों के अनुसार चीन में कोरोना के कुल 83,602 मामले हैं और 4634 लोगों की मौत हुई है। दूसरी ओर, भारत में 8,79,888 मामले सामने आ चुके हैं और 23200 लोगों की मौत हो चुकी है। यानी भारत में कोरोना मामले चीन से 10.52 गुना अधिक हैं। साथ ही, चीन से 5.00 गुना ज्यादा मौत भारत में हो चुकी है।

### अष्टयोग-5040

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | | 5 | 4 | 3 | | 1 |
| | 33 | | 29 | | 33 | |
| 6 | 7 | | 1 | | | 2 |
| | 42 | 4 | 29 | 4 | 25 | |
| 5 | | 7 | | | | 3 |
| | 37 | 6 | 32 | 2 | 33 | 7 |
| 3 | | 1 | | | 6 | |

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5039 का हल

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | 7 | 3 | 4 | 5 | 6 | 1 |
| 1 | 37 | 6 | 29 | 2 | 29 | 6 |
| 6 | 7 | 5 | 1 | 3 | 4 | 2 |
| 4 | 38 | 4 | 29 | 4 | 29 | 4 |
| 5 | 6 | 1 | 4 | 7 | 2 | 3 |
| 7 | 33 | 2 | 32 | 6 | 37 | 7 |
| 3 | 2 | 7 | 4 | 1 | 6 | 5 |

Jagrutidaur.com, Bangalore

## अपना ब्लॉग

### खत्म करने के लिए कुछ बड़े कदम

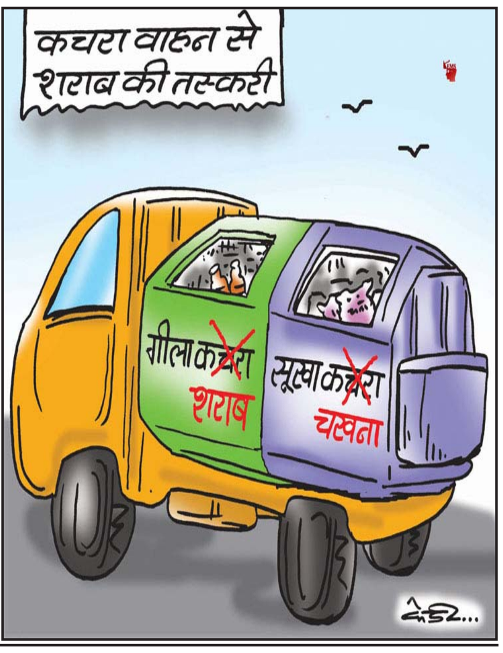**मोहन।** एक उदाहरण झारखंड के धनबाद में देखने को मिला है। जुलाई के प्रथम सप्ताह में यहां एक–दो पत्रकार कोरोना संक्रमित पाए गए। तब जिला प्रशासन ने पत्रकारों के लिए स्वैच्छिक टेस्टिंग की व्यवस्था कर दी। जिन पत्रकारों को कोई लक्षण नहीं था, उनकी भी टेस्टिंग हुई। कुल 55 लोगों में 23 कोरोना संक्रमित पाए गए। इन पत्रकारों की स्वैच्छिक जांच न हुई होती तो अधिकांश के कोरोना संक्रमित होने का पता ही नहीं चलता। जाहिर है कि आंकड़ों के इस खेल में किसी भी चर्चा का प्रारंभ इस तथ्य के साथ होना चाहिए कि कोरोना के टेस्ट कितने हुए। भारत में प्रति दस लाख आबादी पर राष्ट्रीय औसत 8553 टेस्ट का है। इसकी तुलना में यूपी में महज 4929 टेस्ट होना बेहद कम माना जाएगा। जबकि इसी अवधि में दिल्ली ने प्रति मिलियन 39863 टेस्ट किए हैं। इसके कारण दिल्ली में कोरोना के केस भी ज्यादा दिखना स्वाभाविक है। इसके बावजूद दिल्ली में रिकवरी रेट बढ़ना और एक्टिव मामलों की संख्या कम होना संतोषजनक है।